BANC 104: मानव उत्पत्ति और उद्विकास

(अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य)

कोर्स कोड: बीएएनसी 104

असाइनमेंट कोड: BANC 104/ASST/TMA/ जुलाई 2026–जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों में सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए । 20X 2= 40

क. पुरामानवविज्ञान (पैलियोएंथ्रोपोलॉजी) के विषयक्षेत्र की चर्चा कीजिए।

ख. पुरामानवविज्ञान में प्रयुक्त तिथि–निर्धारण (डेटिंग) विधियों की व्याख्या कीजिए।

ग. मियोसीन होमिनॉइड्स तथा उनके उद्विकासवादी महत्त्व का वर्णन कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

(अ) निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए । 10X2=20

क. होमो हैबिलिस (Homo habilis) का वर्णन कीजिए।

ख. होमो इरेक्टस (Homo erectus) की चर्चा कीजिए।

(ब) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिए। 5X2=10

i. होमिनीकरण (Hominisation) की प्रक्रिया

ii. ऑस्ट्रेलोपिथेकस अफारेन्सिस

iii. आद्य होमो सेपियन्स

iv. आधुनिक मानव की उत्पत्ति

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। **10X3=30**

क. कपालमिति को परिभाषित कीजिए तथा किसी भी तीन कपालमितीय स्थलों (Landmarks) का वर्णन कीजिए।

ख. कपाल सूचकांक क्या है? इसकी गणना एवं महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

ग. किसी भी दो दीर्घ अस्थियों के अस्थिमितीय मापों का वर्णन कीजिए।

क. पुरामानवविज्ञान (पैलियोएंथ्रोपोलॉजी) के विषयक्षेत्र की चर्चा कीजिए।

उत्तर

पुरामानवविज्ञान मानवविज्ञान की वह शाखा है जिसमें प्राचीन मानव, उसके निकट पूर्वजों और मानव की विकास-यात्रा का अध्ययन जीवाश्मों तथा उनसे जुड़े भूवैज्ञानिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर किया जाता है। इसे पैलियोएंथ्रोपोलॉजी भी कहते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि मनुष्य की उत्पत्ति कब, कहाँ और किन जैविक तथा पर्यावरणीय परिवर्तनों के बीच हुई। यह केवल अस्थियों का वर्णन नहीं, बल्कि प्राचीन जीवों के जीवन, अनुकूलन और विकास की वैज्ञानिक व्याख्या है।

विषयक्षेत्र और उद्देश्य

मानव की उत्पत्ति और वंश-वृक्ष। इस विषय में मानव और आधुनिक वानरों के साझा पूर्वजों, अलग-अलग होमिनिन शाखाओं तथा उनकी परस्पर संबंध-व्यवस्था का अध्ययन किया जाता है। शोधकर्ता यह देखते हैं कि कौन-से जीवाश्म किस विकासीय शाखा से जुड़ सकते हैं। मानव विकास को अब एक सीधी सीढ़ी के बजाय कई शाखाओं वाला वृक्ष माना जाता है। कुछ शाखाएँ आगे चलीं और कुछ विलुप्त हो गईं।

जीवाश्म मानव एवं तुलनात्मक शरीररचना। खोपड़ी, दाँत, जबड़े, श्रोणि, हाथ और पैरों की अस्थियाँ प्राचीन प्राणियों की शारीरिक बनावट के बारे में बताती हैं। उनकी तुलना वर्तमान मनुष्यों, चिंपैंजियों तथा अन्य प्राइमेटों से की जाती है। दंत-आकार, कपाल-क्षमता, भौंहों की अस्थि-पट्टी, कशेरुकाओं और अंगों के अनुपात से जीवन-पद्धति तथा विकासीय संबंध समझे जाते हैं। उदाहरण के लिए, श्रोणि और फीमर की बनावट से द्विपाद चाल के साक्ष्य मिलते हैं।

प्राइमेट और होमिनिन विकास। पुरामानवविज्ञान का विषय केवल होमो वंश तक सीमित नहीं है। इसमें प्रारम्भिक प्राइमेट, मियोसीन काल के कपि, ऑस्ट्रेलोपिथेकस और होमो वंश की विभिन्न प्रजातियाँ शामिल हैं। इनका अध्ययन बताता है कि दो पैरों पर चलना, हाथों की कुशलता, बड़े मस्तिष्क और जटिल सामाजिक जीवन जैसे गुण अलग-अलग समय पर विकसित हुए। किसी एक गुण से ही किसी जीव को आधुनिक मानव नहीं कहा जा सकता।